Durga Saptashati Patha Vidhaan in Navaratri

वासन्तिक नवरात्र

वासन्तिक नवरात्र आरम्भ	दिनांकः ४ अप्रैल, २०११
कलश स्थापना का समय	६ बजकर ३६ मिनट से पूर्व या ११.३५ बजे से १२.२५ बजे दोपहर तक ।

पाठ विधान

प्रतिपदा अर्थात् नवरात्र के प्रथम दिवस से चण्डी-पाठ अर्थात् दुर्गा सप्तशती का पाठ आरम्भ किया जाता है। कुछ साधक प्रतिदिन सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ करते हैं, लेकिन कुछ साधक समयाभाव के कारण अथवा अन्य किन्हीं कारणों से सम्पूर्ण दुर्गा सप्तशती का पाठ नहीं कर पाते हैं और वे नवरात्र के समापन तक दुर्गा सप्तशती पूर्ण करते है। ऐसे व्यक्ति, जो सम्पूर्ण नवरात्र में केवल दुर्गा सप्तशती का मात्र एक ही पाठ करते हों, उन्हें चाहिए कि वे निम्नानुसार अपने पाठ करें-

प्रतिपदा - अध्याय एक का पाठ करें।

द्वितीया - अध्याय दो व तीन का पाठ करें।

तृतीया - अध्याय चार का पाठ करें। इस दिन सौभाग्य सुन्दरी व्रत रखें।

चतुर्थी - अध्याय पांच, छः, सात व आठ का पाठ करें।

पंचमी - अध्याय नौ व दस का पाठ करके लक्ष्मी-पूजन करें।

छठ - अध्याय ग्यारह का पाठ करें।

सप्तमी - अध्याय बारह व तेरह का पाठ करें। इस दिन महानिशा पूजन भी करें।

अष्टमी - इस दिन महा अष्टमी का व्रत रखें।

नवमी - महा नवमी व्रत, हवन । इस दिन श्री राम नवमी का व्रत भी रखाा जाता है। जो साधक भगवती तारा के उपासक हैं, उनके लिए तो यह

दिवस विशिष्ट स्थान रखता है, क्योंकि उस दिन माता तारा की जयन्ती मनायी जाती है।

(अपनी कुल-परम्परा अथवा अपने संकल्प के अनुसार साधक को अष्टमी अथवा नवमी को अपने द्वारा किये गये पाठों का दशांस हवन करके, कन्या-पूजन करना चाहिए) । पारण दशमी में प्रातःकाल करें।

भगवती दुर्गा का ध्यान हम चतुर्भुजी, अष्टभुजी एवं दशभुजी के रूप में करते हैं। नौ दिन में भगवती के अलग-अलग स्वरूपों का ध्यान एवं जप किया जाता है। यदि साधक के पास समयाभाव हो तो वह नीचे लिखे ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकता है। जो सप्तशती का पाठ करते हैं, वे भी इन ध्यान एवं प्रणाम मंत्रों का जप कर सकते हैं।

सर्वप्रथम मैं यंहा चतुर्भुजी दुर्गा का ध्यान स्पष्ट कर रहा हूँः-

सिंहस्था शशी-शेखरा मरकत-प्रख्यैश्चतुर्भिर्भुजैः।
शंख चक्र-धनुः - शरांश्च दधती नेत्रैस्त्रिभिः शोभिता।।
आमुक्तांगद-हार-कंकण-रणत्-कांची-क्वणन्-नूपुरा।
दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्लसत्-कुण्डला।।
।। श्री चतुर्भुजा-दुर्गायै नमः।।

श्री अष्टभुजी दुर्गा

विद्युद्-दाम-सम-प्रभां मृग-पति-स्कन्ध-स्थितां भीषणाम्।
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-हस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्र-गदाऽसि-खेट-विशिखांश्चापं गुणं तर्जनीम्।
विभ्राणामनलात्मिकां शशि-धरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

।। श्री अष्टभुजी दुर्गायै नमः।।

श्री दश भुजी दुर्गा

कात्यायन्याः प्रवक्ष्यामि, मूर्तिं दश-भुजां तथा।
त्रयाणामपि देवानामनुकारण-कारिणीम्।।
जटा-जूट-समायुक्तामर्धेन्दु-कृत-शेखराम्।
लोचन-त्रय-संयुक्तां, पदमेन्दु-सदृशाननाम्।।
अतसी-पुष्प-वर्णाभां सुप्रतिष्ठां प्रलोचनाम्।
नवयौवन सम्पन्नां, सर्वाभरण -भूषिताम्।।
सुचारू-दशनां तद्-वत् पीनोन्नत-पयोधराम्।
त्रिभंग-स्थान-सस्थानां, महिषासुर-मर्दिनीम्।।
त्रिशूलं दक्षिणे दद्यात्, खड्गं चक्रं क्रमादधः।
तीक्ष्ण-वाणं तथा शक्तिं, वामतोऽपि निबोधत।।
खेटकं पूर्ण-चापं च, पाशमंकुशमूर्ध्वतः।
घण्टां वा परशुं वाऽपि, वामतः सन्निवेशयेत्।।
अधस्तान्महिषं तद्-वद्, वि-शिरस्कं प्रदर्शयेत्।
शिरच्छेतोद्भवं तद्-वद्, दानवं खड्ग-पाणिनम्।।
हृदि शूलेन निर्भिन्नं, निर्यदन्त्र-विभूषितम्।
रक्त-रक्ती-कृतांगश्च, रक्त विस्फारितेक्षणम्।।
वेष्टितं नाग-पाशेन, भृकुटि-भीषणाननम्।
स-पाश-वाम-हस्तेन, धृत-केशं च दुर्गया।।
।। श्री दशभुजी दुर्गायै नमः।।

इसके उपरान्त नवदुर्गाओं के ध्यान तथा प्रणाम मंत्र का उल्लेख किया जा रहा हैः-

वन्दे वांछित -लाभाय, चन्द्रार्ध-कृत-शेखरां।
वृषारूढां शूल-धरां, शैल-पुत्रीं यशस्विनीम्।।
।। श्री शैलपुत्री दुर्गायै नमः।।

दधाना कर-पद्माभ्यामक्ष-माला-कमण्डलू।
देवी प्रसीदतु मयि, ब्रह्म-चारिण्यनुत्तमा।।
।। श्री ब्रह्म-चारिणी-दुर्गायै नमः।।

पिण्डज-प्रवरारूढा, चण्ड-कोपास्त्रकैर्युता ।
प्रसादं तनुते मह्य, चन्द्र-घण्टेति विश्रुता।।
।। श्री चन्द्रघण्टा दुर्गायै नमः।।

सुरा-सम्पूर्ण-कलशं, रूधिराप्लुतमेव च।
दधाना हस्त-पद्माभ्यां, कूष्माण्डा शुभदाऽस्तु मे ।।
।। श्री कूष्माण्डा दुर्गायै नमः।।

सिंहासन-गता नित्यं, पद्मांचित-कर-द्वया।
शुभदाऽस्तु सदा देवी, स्कन्द-माता-यशस्विनी ।।
।। श्री स्कन्द-माता-दुर्गायै नमः।।

चन्द्र-हासोज्ज्वल-करा, शार्दूल-वर-वाहना ।
कात्यायनी शुभं दयाद्, देवी दानव-घातिनी ।।
।। श्री कात्यायनी-दुर्गायै नमः।।

एक-वेणी जपाकर्ण-पूरा नग्ना खरास्थिता।
लम्बोष्ठी कर्णिका-कर्णी, तैलाभ्यक्त-शरीरिणी ।।
वाम-पादोल्लसल्लोह-लता-कण्टक-भूषणा।

वर्धन्-मूर्धं-ध्वजा कृष्णा, काल-रात्रिर्भयंकरी ।।
।। श्री कालरात्रि-दुर्गायै नमः।।

श्वेते वृषे समारूढा, श्वेताम्बर-धरा-शुचिः ।
महागौरी शुभं दद्यान्, महा-देव-प्रमोददा ।।
।। श्री महागौरी-दुर्गायै नमः।।

सिद्ध - गंधर्व - यक्षाद्यैरसुरैरमरैरपि ।
सेव्य-माना सदा भूयात्, सिद्धिदा सिद्धि-दायिनी।।
।। श्री सिद्धिदा-दुर्गायै नमः।।

About The Author

Name :- Shri Yogeshwaranand Ji
Mb :- +919917325788, +919410030994
Email ;- shaktisadhna@yahoo.com
Web : www.anusthanokarehasya.com
www.baglamukhi.info

My dear readers! Very soon I am going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at shaktisadhna@yahoo.com. Thanks

For Purchasing all the books written By Shri Yogeshwaranand Ji Please Contact 9410030994

Some Of the Books Written By Shri Yogeshwarnand Ji

1. **Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi**

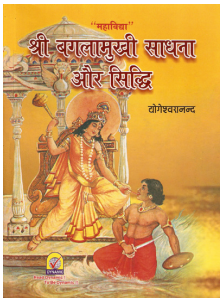

2. **Mantra Sadhna**

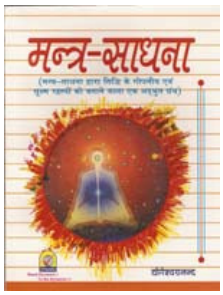

3. **Shodashi Mahavidya**